437/27/12/17

शोधार्थी	–	**गायत्री**
शोध-निर्देशक	–	प्रो. कृष्ण कुमार कौशिक
विभाग	–	हिन्दी
विषय	–	विद्यासागर नौटियाल के कथा साहित्य में दलित और स्त्री की स्थिति का अध्ययन

शोध-सार

पांच शीर्ष शब्द : दलित और स्त्री विमर्श, पितृसत्ता, वर्ण व्यवस्था, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक स्थिति, सामायिक संदर्भ

कथाकार विद्यासागर नैटियाल प्रतिभाशाली एवं प्रगतिशील रचनाकार हैं। नौटियाल अपने पारदर्शी व्यक्तित्व के कारण ही अपने जीवन में विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम रहे। उन्होंने लेखन को ही अपने जीवन का उद्देश्य बनाया। इनके लेखन का केन्द्रीय विषय टिहरी-गढ़वाल के दुर्गम पर्वतों और घाटियों में कठिन परिस्थितियों में जीवन यापन करने वाले दलितों और स्त्रियों के दुख-सुख रहे हैं। तत्कालीन सामंती व्यवस्था और समाज में दलितों और स्त्रियों की स्थिति का जीवंत चित्रण नौटियाल की रचनाओं में मिलता है।

नौटियाल के कथा साहित्य पर उनके मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इनकी रचनाएँ मानवतावादी मूल्यों की पोषक हैं। उनकी मानवतावादी दृष्टि गरीबों, शोषितों, दलितों और स्त्रियों की पक्षधर है। इन्होंने अपने कथा साहित्य में दलित तथा स्त्री जीवन से जुड़ी समाज की विकट परिस्थितियों का जीवंत चित्रण किया है और उससे जुड़े प्रश्नों को तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया है।

प्रथम अध्याय में दलित और स्त्री की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए उसके उदय और विकास से संबंधित विभिन्न विद्वानों के मतों और परिभाषाओं को शामिल किया है। दलित और स्त्री होने का वास्तविक अर्थ क्या है और समाज में उनकी क्या स्थिति है, उन्हें क्या संघर्ष तथा आंदोलन करने पड़े इसका विस्तार से उल्लेख अध्याय में किया गया है और साथ ही, दलित साहित्य तथा स्त्री साहित्य के रचनाकारों के विचारों का भी उल्लेख किया है।

द्वितीय अध्याय में लेखक के व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ ही उनके जीवन-संघर्ष की भी चर्चा की गई है। नौटियाल का व्यक्तित्व अत्यंत पारदर्शी रहा है। यानी जैसे बाहर वैसे भीतर! नौटियाल अपने मन में आई किसी भी बात को छुपा नहीं पाते थे। वे एक स्पष्टवादी वक्ता थे। उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं होती थी कि सुनने वालों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। किसी के मुँह पर उसकी झूठी प्रशंसा करना उनके स्वभाव के विपरीत था। अपने इसी व्यक्तित्व की वजह से ही उन्हें अपने जीवन में कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा जिसका प्रभाव इनकी रचनाओं पर भी दिखाई देता है।

तृतीय अध्याय में विद्यासागर नौटियाल के कथा साहित्य में वर्णित दलित समाज की स्थिति तथा उनके सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आयामों का वर्णन विस्तार से किया है, साथ ही दलित जीवन के संघर्ष का उल्लेख करके यह बताया है कि देश के अन्य राज्यों की तरह ही गढ़वाल में भी वर्ण व्यवस्था का क्रूरतम रूप रहा है। जाति व्यवस्था में हाशिए पर ढकेल दिए गए बहिष्कृतों का जीवन व्यतीत करने वाले भूमिहीन दलितों को किस प्रकार विकट परिस्थितियों का सामना करते हुए कठिन संघर्ष करना पड़ता है इसका उल्लेख इस अध्याय में किया है।

चतुर्थ अध्याय विद्यासागर नौटियाल के कथा साहित्य में वर्णित स्त्री समाज की स्थिति से संबंधित है, जिसमें स्त्रियों के जीवन के विविध आयामों का उल्लेख सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक रूप में किया गया है। तत्कालीन पितृसत्तात्मक सामंती व्यवस्था में स्त्री को किस प्रकार का श्रम तथा संघर्ष करना पड़ता था। इसका विवेचन इस अध्याय में किया गया है।

पंचम अध्याय दलित और स्त्री की स्थिति : सामयिक संदर्भ पर आधारित है। आज दलितों और स्त्रियों की स्थिति में क्या बदलाव आया है, उन्हें अपने अधिकारों को पाने के लिए किन परिस्थितियों तथा संघर्षों का सामना करना पड़ रहा है उसका विवेचन-विश्लेषण उक्त अध्याय में किया गया है।

विद्यासागर नौटियाल ने अपने कथा साहित्य के जरिये दलितों और स्त्रियों के जीवन की दयनीय दशा का जीवंत चित्रण किया है। पहाड़ों से उतरती हुई नदियाँ जैसे मैदानों में जाकर फैल जाती है, ठीक वैसे ही इन रचनाओं में पहाड़ के दलितों और स्त्रियों के दुख, दर्द तथा संघर्ष की दाशंता भारतीय समाज के समस्त दलितों और स्त्रियों के जीवन के प्रतिरूप बन गये हैं। इस आधार पर कह सकते हैं कि विद्यासागर नौटियाल ने दलित तथा स्त्री वर्ग की जिन समस्याओं को अपनी रचनाओं में उठाया है, वे समस्याएँ आज के समय में चल रहे दलित तथा स्त्री विमर्श के संदर्भ में विशेष महत्व रखती है क्योंकि ये समस्याएँ आज भी हमारे समाज में व्याप्त हैं।